**Global Journal of Multidisciplinary Studies** Available online at www.gjms.co.in

Volume 3, Issue 3, Feb 2014

ISSN: - 2348-0459

# भासयुगीन नारियों की राजनैतिक स्थिति

**तरन्नुम खान (शोध छात्रा)**
**संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग**
**रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)**

## सारांश

महाकवि भास को उपलब्ध नाट्य साहित्य के आधार पर देववाणी के प्रथम नाटककार होने का गौरव अद्यावधि प्राप्त है। महाकवि भास के रूपकों का सामाजिक क्षेत्र बहु-आयामी व विविधता को लिए हुए है। इनमें वैयक्तिक जीवन से लेकर पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक विषय से सम्बंधित प्रभूत सामग्री सन्निहित है। भासयुगीन नारियाँ किसी सशक्त राजनैतिक पद पर अधिष्ठित नहीं थी, किंतु उनके कारण राजनैतिक उथल-पुथल एवं संघर्ष अवश्य हुये हैं। सीता, तारा और वासवदत्ता राजनैतिक संघर्ष और उथल-पुथल का कारण रही हैं। कैकेयी चरित्र से तत्कालीन महारानियों की सुदृढ़ राजनैतिक भागीदारिता का पता चलता है। राजा के अभाव में राजमाता द्वारा राज्यशासन का उल्लेख प्राप्त होता है। राष्ट्र कल्याण की महत्त्वपूर्ण योजना में नारी का अमूल्य सहयोग प्राप्त था। जिसमें वासवदत्ता अपना सहयोग देती है। इसी प्रकार पद्मावती में राष्ट्रप्रेम व प्रजा कल्याण की भावना निहित है। तत्कालीन राजकुलों में विवाह भी राजनीति से प्रेरित होते थे उदयन - वासवदत्ता तथा उदयन-पद्मावती विवाह राजनैतिक दांवपेंचों के कारण परिणित हुये थे।

**शब्दखोज** - नाट्य, सशक्त, राष्ट्रप्रेम

**Global Journal of Multidisciplinary Studies** Available online at www.gjms.co.in
Volume 3, Issue 3, Feb 2014
ISSN: - 2348-0459

## नारी : राजनैतिक संघर्ष तथा उथल -पुथल का कारण

भास के समय में हम किसी भी नारी को सशक्त राजनैतिक पद पर नहीं पाते हैं। कोई भी नारी सम्राज्ञी तथा अमात्य (मंत्री) जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर अधिष्ठित नहीं थीं, किंतु नारियाँ तत्कालीन राजनीतिक संघर्ष तथा उथल-पुथल का अवश्य कारण रही हैं। अभिषेक नाटक में राम-रावण के भयंकर युद्ध का कारण सीता हरण था। वहीं सुग्रीव और बाली के मध्य युद्ध का कारण तारा थी अभिषेक नाटक में तारा के कारण राम बाली का वध करके सुग्रीव को किष्किन्धा का राजा बनाते हैं।[1] रावण के सीता हरण के कारण राम रावण को युद्ध में मारकर विभीषण को लंकाधिपति नियुक्त करते हैं। [2] इसी प्रकार प्रतिज्ञायौगन्धरायण में वासवदत्ता का हरण महासेन और उदयन के मध्य संघर्ष की स्थिति को निर्मित कर देता है।

यद्यपि नारी की राजनीति में प्रत्यक्ष भागीदारिता नहीं थी, तथापि वह नेपथ्य से राजनीति का संचालन कर अप्रत्यक्ष रूप से सुदृढ़ राजनैतिक स्थिति रखती थी। इस प्रकार की स्थिति हम प्रतिमा की नारी पात्र कैकेयी की पाते है। कैकेयी राम के राज्याभिषेक के समय विवाह शुल्क के रूप में पति दशरथ से अपने पुत्र का राज्याभिषेक तथा दशरथ की राजगद्दी के उत्तराधिकारी ज्येष्ठ पुत्र राम का चौदह वर्ष का वनवास माँगती है।[3] दशरथ को कैकेयी के इस विवाह शुल्क को पूर्ण करना पड़ता है। इसीलिए वह राम का अभिषेक रोक देते हैं[4] तथा कैकेयीपुत्र भरत को बुलाकर उसका अभिषेक करने का आदेश देते हैं।[5]

कौशल्या और सीता ने कैकेयी के द्वारा निर्मित स्थिति के विरोध में अपनी आवाज न उठाकर तथा वस्तुस्थिति को स्वीकार कर एक प्रकार से कैकेयी की ही राजनैतिक भूमिका में अपना सहयोग ही प्रदान किया है। यदि वे इसमें सहयोग नहीं करती और उस स्थिति का विरोध करतीं तो उनकी सुदृढ़ राजनैतिक भूमिका प्रदर्शित होती।

**राजमाता** - प्रतिज्ञायौगन्धरायण में प्रद्योत के द्वारा उदयन को बंदी बना लिये जाने पर उदयन की माता (राजमाता) यौगन्धरायण को संदेश भेजती हैं जिसमें वह यौगन्धरायण को आदेश देती हैं कि वह उदयन को प्रद्योत के यहाँ से छुड़ाकर वापिस ले आयें।[6] यौगन्धरायण को भेजा गया यह संदेश तत्कालीन राज्यव्यवस्था की ओर निर्देश करता है जिसमें राजा के नाबालिग होने अथवा राजा के अभाव में एक प्रशासक मंडल शासन करता था जिसकी अध्यक्ष राजमाता होती थीं।[7] अतः प्रतिज्ञा की उक्त घटना से यह स्पष्ट संकेत प्राप्त होते हैं कि उदयन के बंदी बना लिये जाने पर उनकी माता ने शासन का संचालन किया था।

## राष्ट्र कल्याण में राजकुल की नारियों का सहयोग -

स्वप्नवासवदत्तम् में वत्स देश की महारानी वासवदत्ता महत्वपूर्ण राजनैतिक भूमिका में दृष्टिगोचर होती है। वासवदत्ता राष्ट्र के कल्याणार्थ तथा वत्स और मगध राज्यों को परस्पर एकता और संगठन में बांधने के लिये उदयन के स्वामिभक्त अमात्य यौगन्धरायण की कूटनीतिक योजना में अमूल्य सहयोग प्रदान करती है। राष्ट्रहित के लिये वासवदत्ता राजमहल के समस्त सुखों का त्याग कर अपने प्राणों से प्रिय पति से दूर हो जाती है तथा पति के द्वितीय विवाह को भी स्वीकार कर लेती है।[8]

वासवदत्ता का अपूर्ण त्याग रंग लाता है। उदयन पद्मावती विवाह के परिणामस्वरूप मगध राज दर्शक की सहायता से उदयन आरूणि द्वारा अपहृत वत्सराज्य की पुनः प्राप्ति करते हैं।[9] वासवदत्ता के प्रेम व सुखों के बलिदान स्वरूप हरण हुये राज्य की प्राप्ति हो पाती है। वासवदत्ता के सहयोग के अभाव में उदयन की पुनः राज्य प्राप्ति असंभव थी।

वासवदत्ता के साथ-साथ पद्मावती भी राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव रखती है, क्योंकि यदि पद्मावती के हृदय में राष्ट्र प्रेम नहीं होता तो वह आवन्तिका वेषधारिणी वासवदत्ता के रहस्योद्घाटन होने पर उससे क्षमा याचना नहीं करती, बल्कि वह इस योजना को षड्यंत्र की संज्ञा देकर यौगन्धरायण

और वासवदत्ता पर आरोप लगा सकती थी, किंतु पद्मावती ने ऐसा नहीं किया। अतः उसमें भी राष्ट्र के प्रति प्रेम विद्यमान है। इसी प्रकार राजकुमारी पद्मावती जब आश्रम में आकर यह घोषणा करवाती है कि जिस किसी को सहायता की आवश्यकता है वह याचना करे। राजकुमारी की इस उद्घोषणा[10] से उसके प्रजा के प्रति कल्याण का भाव ज्ञात होता है।

**राजनीति से प्रेरित विवाह –**

**उदयन – वासवदत्ता विवाह –**

तत्कालीन पड़ौसी राज्यों में परस्पर संघर्ष हुआ करते थे। वे एक दूसरे के राज्य को हड़पने की ताक में रहते थे। साथ ही अपनी स्वार्थपूर्ति तथा राजनैतिक सुदृढ़ता के लिये इन राज्यों के मध्य वैवाहिक गठबंधन भी हुआ करते थे। वत्सराज उदयन और वासवदत्ता तथा उदयन और पद्मावती का विवाह राजनैतिक कूटनीति से प्रेरित थे। उदयन और वासवदत्ता का विवाह तो एक ऐतिहासिक घटना है जिसके पुष्ट प्रमाण हमें बौद्ध तथा पौराणिक साहित्य में प्राप्त होते हैं।

अवन्तिराज प्रद्योत तथा उनकी पत्नी अंगारवती उदयन के गुणों पर मुग्ध थे[11] अतः वह उदयन को वासवदत्ता के प्रार्थी के रूप में देखना चाहते थे, किंतु उदयन ने वासवदत्ता के विवाह के लिये कोई प्रस्ताव नहीं भेजा गया था, [XII] क्योंकि महासेन उदयन को अपना जामाता बनाना चाहता था इसीलिए उसने अपने मंत्रिमंडल की सहायता से[XIII] उदयन को बंदी बनाकर उज्जयिनी में कैद कर लिया तथा उदयन को वासवदत्ता के प्रति आकर्षित करने के लिये उसे वासवदत्त का वीणा शिक्षक नियुक्त कर दिया।[14] उदयन के वासवदत्ता को लेकर भाग जाने के उपरांत महासेन इसे क्षात्रधर्म के अनुसार विवाह मानकर उनके चित्रों के द्वारा विवाह संस्कार पूर्ण कर विवाह को स्वीकृति प्रदान करते हैं।[15]

इस प्रकार उदयन-वासवदत्ता विवाह राजनीतिक दांव पेचों के कारण परिणित हुआ था।

**उदयन – पद्मावती विवाह –**

उदयन और पद्मावती का विवाह भी राजनीति से प्रेरित था। उदयन के वासवदत्ता से परिणय के पश्चात् संभवतः पत्नी में अत्याधिक अनुरक्ति के कारण उदयन राज्य कार्य तथा कर्तव्यों को विस्मरण कर देता है जिसका लाभ उठाकर आरूणि वत्स देश को हड़प लेता है। अतः आरूणि द्वारा हस्तगत किये राज्य की पुनः प्राप्ति के लिये मगध राज्य की सहायता की नितांत आवश्यकता थी मगध से यह सहायता वैवाहिक गठबंधन के आधार पर ली जाती है। यौगन्धरायण अपने मंत्रियों के साथ मिलकर[16] एक कूटनीतिक योजना बनाते हैं जिसमें वासवदत्ता अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती है।[17] यौगन्धरायण वासवदत्ता के जल जाने का झूठा प्रवाद फैलाकर वासवदत्ता को मृत घोषित कर देते हैं तथा उदयन का द्वितीय विवाह मगध राजकुमारी पद्मावती से सम्पन्न करा देते है।[18] उदयन पद्मावती विवाह के पश्चात् मगध नरेश दर्शक की सहायता से उदयन वत्सदेश की पुनः प्राप्ति करते हैं।[19]

इस प्रकार प्रतिज्ञायौगन्धरायण और स्वप्नवासवदत्तम् में उस काल के तीन बड़े राज्य अवन्ती, मगध और वत्स में परस्पर वैवाहिक संबंध स्थापित कर एकता व संगठन को मजबूत करने का प्रयास किया गया है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. भासनाटकचक्र (महाकवि भास के संपूर्ण नाटकों का संकलन) – अभिषेक नाटक, द्वितीय अंक, पृष्ठ संख्या 36, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, संस्करण वर्ष – 2002
2. वही, षष्ठ अंक, पृष्ठ संख्या 103
3. वही, प्रतिमानाटक, षष्ठ अंक, पृष्ठ संख्या 193
4. वही, प्रथम अंक, पृष्ठ संख्या 25
5. वही, द्वितीय अंक, पृष्ठ संख्या 80
6. वही, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, प्रथम अंक, पृष्ठ संख्या 37

7. प्राचीन भारतीय शासन पद्धति - डॉ. ए.एस.अल्तेकर, पृष्ठ संख्या 71 (उद्धृत - संस्कृत के ऐतिहासिक नाटक, पृष्ठ संख्या 132)
8. भासनाटकचक्र (महाकवि भास के संपूर्ण नाटकों का संकलन) - स्वप्नवासवदत्तम्, प्रथम अंक, पृष्ठ संख्या 30, 37-38, तृतीय अंक, पृष्ठ संख्या 62
9. वही, पंचम अंक, पृष्ठ संख्या 130-131, षष्ठ अंक, पृष्ठ संख्या 148
10. वही, प्रथम अंक, पृष्ठ संख्या 16, 22-23
11. वही, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, द्वितीय अंक, श्लोक संख्या 1-5, 9-11
12. वही, पृष्ठ संख्या 62
13. वही, प्रथम अंक, पृष्ठ संख्या 20-28
14. वही, चतुर्थ अंक, पृष्ठ संख्या 124, स्वप्नवासवदत्तम्, प्रथम अंक, पृष्ठ संख्या 41, षष्ठ अंक श्लोक संख्या 11, पृष्ठ संख्या 153-154
15. वही, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, चतुर्थ अंक, पृष्ठ संख्या 129
16. वही, स्वप्नवासदत्तम्, प्रथम अंक, पृष्ठ संख्या 30
17. वही, पृष्ठ संख्या 11, 27
18. वही, चतुर्थ अंक, पृष्ठ संख्या 62-68
19. वही, पंचम अंक, पृष्ठ संख्या 130-131, षष्ठ अंक, पृष्ठ संख्या 148